29/01/22 B.A Hons Part I Paper II

Ques Define westernisation and Discuss its impact on caste system.

पश्चिमीकरण की परिभाषा दे तथा जाति व्यवस्था पर इसके प्रभावों की विवेचना करें।

Ans.. साधारण बोलचाल की भाषा में पाश्चात्यीकरण का अर्थ पश्चिमी देशों के समान वेश भूषा, खान-पान व्यवहारों के ढंगों को ग्रहण करना है। परन्तु पश्चिमीकरण का अर्थ इस सामान्य अर्थ से भिन्न है। वास्तव में पश्चिमीकरण वह प्रक्रिया है जो एक बाहरी देशों के रूप में भारत की सांस्कृतिक विशेषताओं में होने वाले परिवर्तन को स्पष्ट करती है।

एम० एन० श्रीनिवास ने पश्चिमीकरण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है, "पश्चिमीकरण का तात्पर्य भारतीय जीवन समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में पैदा होने वाले उन सभी परिवर्तनों से है जो पश्चिमी की प्रौद्योगिकी व्यवहारों के नियम विचारों और सामाजिक मूल्यों से सम्बन्धित है।" इससे यह स्पष्ट होता है कि जब किसी समाज में व्यवहार करने के तरीके, विश्वास विचार उत्पादन के तरीके और सामाजिक मूल्य पश्चिमी देशों की संस्कृति के अनुसार बदलने लगते हैं। तब इस दशा को हम पश्चिमीकरण कहते हैं।

जाति पर पश्चिमीकरण का प्रभाव

impact of westernisation on caste system.

- जाति व्यवस्था आधारों के पश्चिमीकरण बदल दिया है। इसका जाति व्यवस्था

पर भी प्रभाव पड़ा है, जो ...
है —

1. ब्राह्मणों के प्रभुत्व में कमी - पश्चिमीकरण के कारण जाति पर ब्राह्मणों के प्रभुत्व में कमी आयी है। जाति व्यवस्था को अब एक कृत्रिम व्यवस्था माना जाने लगा है और भारतीय जाति व्यवस्था का ब्राह्मणों को माना जा रहा है। पूजा पाठ तथा धार्मिक क्रियाओं का महत्व घटने से ब्राह्मणों की परम्परागत प्रभुता को ठेस पहुँची है।

2. छुआछूत की भावना की समाप्ति - पश्चिमीकरण के चलते सभी जातियों को वैधानिक समानता प्रदान की गई। इसलिए जाति के आधार पर पायी जाने वाली सामाजिक दूरी कम हो गयी है। परन्तु व्यावहारिक रूप में छुआछूत का प्रचलन आज भी बना हुआ है।

3. व्यवसाय के चुनाव की स्वतंत्रता - जाति व्यवस्था के अन्तर्गत एक व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता था उसी जाति का परम्परागत व्यवसाय वह अपनाता था। परन्तु पश्चिमीकरण के कारण व्यक्ति को व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता मिली। अब लोग अपनी योग्यता और कुशलता के आधार पर अपना व्यवसाय चुन रहे हैं।

4. विवाह प्रतिबन्ध में शिथिलता - जाति के विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्धों में भी पश्चिमीकरण के कारण शिथिलता

आयी है। अब दूसरी जाति में भी लोग विवाह कर रहे हैं। साथ ही विवाह का जन्म-जन्मांतर का सम्बन्ध अब नहीं माना जाता है। इसके अलावा विवाह विच्छेद को एक सामाजिक अपराध नहीं माना जाता है। फलतः दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य नहीं होने पर लोग विवाह विच्छेद करने लगे हैं।

5. भोजन सम्बन्धी प्रतिबन्ध में शिथिलता - पाश्चात्य देशों के प्रभाव से भोजन सम्बन्धी प्रतिबन्ध भी शिथिल हो गये हैं। सभी जाति के लोग अब एक साथ बैठकर भोजन ग्रहण करने लगे हैं। इतना ही नहीं उच्च जाति के लोग निम्न जातियों के यहाँ भोजन और पानी ग्रहण करने लगे हैं।

6. जजमानी प्रथा की समाप्ति - जजमानी प्रथा का प्रभाव अब कम हुआ है। परम्परागत सम्बन्धों के आधार पर अब सेवा देनेवाली जातियाँ अपनी सेवाएँ प्रदान नहीं करती हैं बल्कि लाभ और प्रतिष्ठा को ध्यान में रखकर किसी भी व्यक्ति को सेवाएँ प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए हजाम अब किसी गाँव या जाति की प्रथा नहीं है, इसलिए खोलकर वह कई गाँवों के लोगों को अपनी सेवा प्रदान करता है।

7. जाति पंचायतों का विघटन - पुलिस और न्यायालयों की स्थापना विभिन्न काल में कई तथा दण्ड संहिता का निर्माण हुआ। इसका जाति पंचायत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। अब जाति पंचायत के

यह संभव न रहा कि वह किसी को शारीरिक दण्ड दे या अमानवीय तरीके से अभियुक्त की परीक्षा ले सके। फलतः जाति पंचायतों का परम्परागत स्वरूप विघटित हो गया।

8. जातीय संघर्ष - भारत में समानता की भावना और राजनीतिक सहभागिता के कारण अनेक जातीय संगठनों का निर्माण हुआ। ये संगठन मानवाधिकारों की मांग करने लगे फलस्वरूप जातीय संघर्ष को बढ़ावा मिला।

9. वर्गों का विकास - आज भारत में किसी जाति के लोग जिनकी आर्थिक, राजनीतिक तथा शैक्षणिक स्थिति उच्च है। उच्च जाति के नहीं बल्कि उच्च वर्ग के सदस्य कहे जाने लगे हैं। इसी प्रकार विभिन्न जातियों के ऐसे लोग जिनकी आर्थिक, राजनीतिक तथा शैक्षिक स्थिति निम्न स्तर की है, उच्च जाति के सदस्य होते हुए भी क्रमशः मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग के सदस्य समझे जाने लगे हैं। फलस्वरूप समाज में आज जाति के आधार पर नहीं बल्कि वर्ग के आधार पर व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति का निर्धारण होने लगा है।

Vijay Kumar Mishra
Dept of Sociology
29/01/21